नाटक और एकांकी में अन्तर

- डॉ० उदयभान भगत

काव्य-भेदों में नाटक जितना रमणीय है, उतना ही प्राचीन और महत्वपूर्ण भी है। यूनान और भारत दोनों ही प्राचीन सभ्यता के देशों में दृश्यकाव्य का विकास बहुत प्राचीन काल में ही हो गया था। अभिनयशील तथा दृश्यकाव्य को संस्कृत में रूपक और पाश्चात्य साहित्य में 'ड्रामा' कहा जाता है। हिन्दी में इसे 'नाटक' कहा गया है नाटक 'नट' शब्द से निर्मित है, जिसका आशय है- 'सात्विक भावों का अभिनय'। जिसप्रकार उपन्यास के क्षेत्र में कहानी का उदय हुआ, ठीक उसी प्रकार नाटक के अंतर्गत एकांकी नामक विधा का उदय हुआ है आज के व्यक्ति का जीवन व्यस्त, जटिल और विषम परिस्थितियों में फंसे होने के कारण विशालकाय महाकाव्य, नाटक तथा बृहदकाय उपन्यास पढ़ने के लिए समय नहीं नहीं मिल पाता अतः उसे एक छोटी-सी रचना चाहिए जो उसका मनोरंजन कर सके, इस दृष्टि से आज के युग में एकांकी की लोकप्रियता काफी बढ़ी है।

नाटक :- जो रचना श्रवण द्वारा ही नहीं अपितु दृष्टि द्वारा भी दर्शकों के हृदय में रसानुभूति कराती है उसे नाटक या दृश्यकाव्य कहते हैं।

एकांकी :- एक अंक वाले नाटक को एकांकी कहा जाता है। अंग्रेजी में इसे one Act Play कहा जाता है

एकांकी और नाटक दोनों साहित्य की विधाएँ हैं। दोनों का संबंध रंगमंच और अभिनय से है। परन्तु इन दोनों विधाओं में कुछ अंतर स्पष्ट है जो निम्नलिखित है-

PTO

- नाटक में तीन से पाँच अंक होता है तथा अंको के अंतर्गत दृश्यो का विभाजन होता है। एकांकी में एक ही अंक होता है, इसमें दृश्यों का विभाजन नहीं होता।
- नाटक में पात्रों की संख्या अधिक होती है। एकांकी में पात्र सीमित होते हैं।
- नाटक में कथा का फैलाव अधिक होता है। एकांकी की कथा संक्षिप्त होती है
- नाटक को रंगमंच पर प्रस्तुत करने में तीन से पाँच घंटे का समय लगता है। एकांकी को 30 मिनट से 45 मिनट के अंदर समाप्त किया जाता है
- नाटक में संकलनत्रय का होना जरूरी नहीं है। एकांकी में संकलनत्रय की महत्वपूर्ण भूमिका होती है
- नाटक में लंबे-लंबे संवाद हो सकते हैं। एकांकी में संवाद संक्षिप्त, मार्मिक एवं प्रभावोत्पादक होता है।
- नाटक में अंक और दृश्य अधिक होने के कारण रंगमंच पर प्रस्तुत करने के लिए अधिक उपकरणों एवं पर्दे की आवश्यकता पड़ती है। एकांकी में एक अंक होने के कारण पटाक्षेप की आवश्यकता नहीं पड़ती।
- दर्शकों को नाटक देखने के लिए खर्च एवं अधिक समय की आवश्यकता पड़ती है। एकांकी में दर्शक कम समय में ही आनन्द प्राप्त कर लेता है।
- नाटक के पात्र वृक्षभ की भांति रंगमंच पर आते हैं और अधिक समय तक दर्शकों के समक्ष टिके हैं। एकांकी के पात्र हिरण की भाँति रंगमंच पर आते हैं और अपना उद्देश्य पूरा करके आँखों से ओझल हो जाते हैं।
- नाटक के कथानक में आधिकारिक और प्रासंगिक दोनों कथा होते हैं, एकांकी में प्रासंगिक का स्थान नहीं होता।

— x —